6.1.68 शनिवार ओमशांति प्रातःक्लास

रुहानी बाप रोज2 रुहानी बच्चों को समझाते हैं और बच्चे भी अपने को आत्मा समझकर बाप से समझते हैं। जैसे बाप है गुप्त। वैसे ही ज्ञान भी गुप्त है। बच्चे भी गुप्त हैं। किसी को भी समझ में नहीं आता है कि आत्मा क्या है, परमपिता परमात्मा क्या है। तुम बच्चों को तो यह पक्की टेव पड़ जानी चाहिए कि मैं आत्मा हूं। बाप हम आत्माओं को ही सुनाते हैं। यह बुद्धि से समझना है और एक्टिविटी में भी आना है। बाकी धन्धा आदि तो सभी को करना हे। कोई को बुलावेंगे तो भी जरूर नाम से ही। नाम–रूप में तो सभी जरूर ही हैं। नाम–रूप में हैं तो ही तो बोल भी सकते हैं, कुछ भी कर सकते हैं। सिर्फ यही पक्का निश्चय करना है कि मैं आत्मा हूं। निराकार परमपिता परमात्मा हमको समझा रहे हैं। महिमा सारी निराकार की ही है। अगर साकार में इन देवताओं आदि की महिमा है तो भी इनको तो महिमा लासक बनाया है। महिमा लायक थे। फिर नालायक बने। अब फिर से बाप लायक बनाते हैं। इसलिए ही निराकार की महिमा है। विचार किया जावे तो बाप की तो कितनी ही महिमा हे। कितने उनके सर्विस की हुई है। ....ड्रामा चलता ही रहता है। यह बहुत समझने की बातें हैं। परमात्मा की तो बहुत ही महिमा गाते हैं। वो ही समर्थ है। ...कुछ करते हैं। अभी हम तो बहुत थोड़ी महिमा गाते हैं। महिमा उनकी है बहुत। मुसलमान लोग भी गाते हैं कि अल्लाह मियां ने ऐसा फरमाया है.....अब फरमान भी किसके आगे? बच्चों के तो आगे फरमाते हैं ना जो कि तुम फिर मनुष्य से देवता बनते हो। अल्लाह मियां ने किसी की(के) प्रति तो फरमाया होगा ना। तुम बच्चों को समझाते हैं। जिसका ही कोई को भी पता नहीं है। अब तुमको पता पड़ा है फिर यह ज्ञान गुम हो जावेगा। बौद्धी भी ऐसे कहेंगे। क्रिश्चियन्स भी ऐसे ही कहेंगे ;परंतु क्या फरमाया था सो कोई को भी पता नहीं है। बाप तुम बच्चों को अल्फ और बे दो अक्षरों को समझाते हैं। आत्मा को बाप की याद भूल नहीं सकती है। आत्मा अविनाशी है तो याद भी अविनाशी ही रहती है। बाप भी अविनाशी है। गाते तो हैं कि अल्लाह मियां ने ऐसा कहा था ;परंतु वो कौन है, क्या कहा था वो कुछ भी नहीं जानते हैं। अल्लाह मियां को वो भित्तर–ठिक्कर में ठोक दिया है। .....बाप कहते हैं कि भक्तिमार्ग में प्रार्थना आदि तो सभी करते ही हैं ना। अब तुम जानते हो कि जो भी आते हैं उनको नीचे तो उतरना ही है। सतोप्रधान से सतो,रजो,तमो में आना ही है। पढ़ाने वाला तो है ही....। क्राइस्ट ,बौद्धी आदि जो भी आते हैं उनको बाद (में) नीचे उतरना ही है। चढ़ने की तो बात ही नहीं। बाप ही आकर सबको चढ़ा देते हैं। ....का सदगति दाता तो एक ही है। और तो कोई भी सदगति करने नहीं जाते हैं। समझो कि क्राइस्ट .... किसी को बैठ सुनावेंगे। इन बातों को समझने लिए तो बहुत बुद्धि चाहिए। सारा दिन ही इस विचार–सागर–मंथन में लगे रहना चाहिए। नई2 युक्तियां मिलती रहती हैं। तुमको (ही निकालते) रहना है। सिर्फ बाबा (की ही बात) नहीं हैं। मेहनत करनी है। प्वाइंट्स अथवा रत्न निकालने हैं। .....बैठकर विचार–सागर–मंथन करो। लिखो। फिर लिखे हुए को देखो कि कौन सी अच्छी वाली प्वाइंट्स उस लिखत में मिस हुई है। इसको ही विचार–सागर–मंथन करना कहा जाता है। ... .बाप कल्प पहले वाली ही नालेज सुनाते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं कि जो भी धर्म स्थापन करने आते हैं उनको तो नीचे उतरना ही है। वो फिर किसी को भी चढ़ावेंगे कैसे? सीढ़ी से नीचे उतरना ही है। पहले सुख फिर दुःख में आना है। यह नाटक बहुत रिफाइन बना हुआ है। इसमें विचार–सागर–मंथन करने की बहुत दरकार रहती है। वो लोग तो कोई सदगति करने के लिए नहीं आते हैं। वो तो आते ही हैं सिर्फ धर्म स्थापन करने। ज्ञान का सागर तो एक ही है। और कोई में भी ज्ञान नहीं है। ड्रामा में (सुख) और दुःख का खेल तो सभी के ही लिए है। दुःख से भी सुख जास्ती है। ड्रामा में पार्ट बजाते हैं तो जरूर कुछ तो सुख होना चाहिए ना। बाप कोई दुःख थोड़े ही स्थापन करेंगे। बाप तो सभी को सुख देते हैं। विश्व में शांति हो जाती है। दुःखधाम में तो शांति

हो नहीं सकती है। शांति तो फिर से मिलनी है जबकि वापसी में फिर से शांतिधाम .....बाप बैठ समझाते हैं कि यह तो कब भी भूलना नहीं चाहिए। हम बाप के साथ हैं। बाप आया हुआ है असुर से देवता बनाने। कुम्भकरण की सीनरी चित्र में दिखाई गई है ना। इस समय सभी असुर हैं ,जंगली जनावर हैं। यह देवताएं सदगति में रहते हैं तो बाकी सभी आत्माएं मूलवतन में रहती हैं। ड्रामा में सबसे बड़ी कमाल ही है बेहद के बाप की। तुमको एकदम परिजात बना देते हैं। पढ़ाई से परी बनते हो। यह बहुत समझने और विचार–सागर–मंथन करने की बातें हैं। भक्तिमार्ग में तो कुछ भी समझ नहीं है। माला बैठ सिमरण करते हैं। कोई हनुमान को, कोई गणेश को, कोई किसी की बैठ पूजा करते हैं। अब उनको याद करने से फायद ही क्या? बाप ने समझाया है कि इस समय के मनुष्य तो हैं ही सभी जनावरों के मिसल। बाप ने कहा था कि .....तो उन्होंने फिर हाथी पर ही बैठ सवारी दिखाई है। तो यह सभी बातें बाप बिना और तो कोई भी समझा नहीं सकते हैं। इतने बड़े2 आदमी हैं तो उनको कितना मान रखते हैं। कितने लोग स्वागत करते हैं। हैं कौन? एकदम ही तमोप्रधान बंदर बुद्धि। बंदरों का बंदर ही स्वागत (करते) हैं। तुम थोड़े ही ऐसे किसी का स्वागत करेंगे ;क्योंकि तुम तो जानते हो कि यह सारा झाड़ जड़जड़ीभूत है। सभी पतित,भ्रष्टाचारी हैं। विख की पैदाइश है ना। मूत है ना। तुमको पता है कि मूत से भी चीजें पैदा होती हैं। मनुष्य के किचरे से खाद बनती है। जो ही फिर बिकती है। गंद के नाले जाकर खेती में पड़ते हैं। उसकी ही फिर खाद बनती है। वहां पर तो ऐसी चीजें होती नहीं हैं। वहां पर तो नैचुरली ही फर्स्ट क्लास बहुत मीठे2 चीजें निकलती हैं। तो यह फीलिंग आनी चाहिए स्वर्ग में तो गंदगी की बात हो नहीं सकती है। तो ही बाप कहते हैं तुम तो पदमपति बनते हो। सुदामा पदमपति बना था ना। अपने ..... ही किया ना। बाप कहते हैं कि तुम इस पढ़ाइ से कितना उंचा बनते हो। वो गीता तो सभी सुनते हैं और पढ़ते रहते हैं। यह भी पढ़ता था ;परंतु जबकि बाप ने बैठकर सुनाया तो वंडर खाया। बाप की गीता से तो सदगति हुई थी। यह मनुष्यों ने क्या बैठ बनाया है। कहते हैं कि अल्लाह मियां ने ऐसे कहा ;परंतु समझते कुछ भी नहीं। अल्ला कौन है? देवी–देवता धर्म वाले ही भगवान को नहीं जानते तो दूसरे जो पीछे आये हैं वह कैसे जान सकते। सर्वशास्त्रमई गीता ही रांग कर दी है। तो बाकी शास्त्रों में क्या होगा? बाप ने तो तुम बच्चों को सुनाया जो प्रायःलोप हो गया है। अभी तुम बाप से सुनकर पढ़कर देवता बन रहे हो। पुरानी दुनियां का हिसाब–किताब तो सबको चुक्तू करना ही है। फिर आत्मा .....बन जाती है। उनका भी कुछ हिसाब–किताब होगा तो वह चुक्तू होगा। हम ही पहले2 जाते हैं .....पहले आते हैं। सजा तो सब खाकर हिसाब–किताब चुक्तू करेंगे। इन बातों में भी जास्ती नहीं जाना है। पहले तो निश्चय कराओ सर्व का सदगति दाता बाप, टीचर,गुरू एक ही है। वह है अशरीरी। अब आत्मा में कितना ज्ञान है। ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर उनकी कितनी महिमा है। है वह आत्मा ही। आत्मा ही आकर फिर शरीर में प्रवेश करती है। सिवाय परमपिता परमात्मा के और कोई भी आत्मा की ....महिमा नहीं करेंगे। और सभी शरीरधारियों की महिमा करेंगे। यह है सुप्रीम आत्मा। बिगर शरीर (आत्मा) की महिमा सिवाय एक निराकार बाप के और कोई की भी नहीं है। आत्मा में ही सब संस्कार हैं ना। .....में कितनी ज्ञान का संस्कार है। प्यार का सागर, शांति का सागर.....यह आत्मा की ही महिमा है। कोई मनुष्य की महिमा नहीं है। कृष्ण की हो न सके। यह तो पहला नम्बर प्रिंस है। बाप में तो सारा नालेज है, जो आकर बच्चों को वर्सा देते हैं। इसलिए महिमा भी गाई जाती है। शिवजयंती ... हीरे तुल्य है। धर्म स्थापक आते हैं वह क्या करते हैं। समझो क्राइस्ट आया। उस समय क्रिश्चियन तो है नहीं .....करके कहेंगे अच्छी चलन चलो। सो तो मनुष्य समझाते रहते हैं। सदगति नालेज कोई दे न सके। उनको तो अपना2 पार्ट मिला हुआ है। सतो,रजो,तमो में जरूर आना ही है।

आने से ही क्राइस्ट की चर्च कैसे बनेगी। जब बहुत होंगे तो भक्ति मार्ग शुरू होगा। तब चर्च आदि बनावेंगे। इसमें तो बहुत पैसे चाहिए ना। लड़ाई में भी पैसे चाहिए। तो बाप समझाते हैं ...कितने ढेर मनुष्य हैं। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है ना। झाड़ कब इतना बड़ा लाखों वर्ष का होता है क्या? हिसाब ही नहीं बन सकता। बाप समझते हैं हे बच्चों तुम कितने बेसमझ बन गए हो। अब फिर समझदार भी तुम बनते हो। तुम पहले से ही तैयार हो आते हो राज्य करने। वह तो अकेले ही आते हैं फिर वृद्धि होती है। झाड़ का फाउंडेशन थुर है देवी–देवता धर्म। उनसे फिर तीन तबक्के निकलते हैं। फिर उनसे वृद्धि होती है। छोटे2 जो मठ पंथ आते हैं उनकी भी कुछ न कुछ महिमा हो जाती है। (अरविंदो घोष की हिस्ट्री) पांडिचेरी में जाये ,वेश बदल लिया। फिर अपनी आश्रम जमाय लिया। समझा जाता है कोई अच्छी सोल प्रवेश हुई या उनका हिसाब–किताब ही ऐसा था ;परंतु उनसे भी तो फायदा कुछ भी नहीं है। लाखों उनकी मुरीद बने ;परंतु सीढ़ी उतरते दुर्गति को पाते ही रहते हैं। सबको सीढ़ी उतरनी ही है। कहेंगे शास्त्रों में ऐसे लिखा हुआ है ;परंतु बाप समझाते हैं गीता, माई–बाप , जो झूठी तो और सब शास्त्र भी झूठे ही होंगे। उनमें फिर क्या होगा? हम कहते हैं गीता पढ़ते2 दुर्गति को पा लिया है। तो और शास्त्र भी पढ़ते2 नीचे ही उतरते हैं। यह बुद्धि से समझने की बातें हैं। कुरान आदि पढ़ते नीचे ही उतरते हैं। उपर तो कोई जावेंगे नहीं। नीचे उतरना ही है। सिर्फ मनुष्य समझेंगे यह भक्त आदमी है ;परंतु हैं थोड़े ही। उनसे तो और ही ठगत बनते हैं। अभी समझते हैं गीता आदि पढ़ते नीचे ही उतरते आये हैं। उनमें ताकत कुछ नहीं। कहा जाता है रिलीजन इज माइट। बाप जो धर्म स्थापन करते हैं यह तो जरूर बहुत उंचा होगा। कितनी ताकत है बाबा के इस धर्म स्थापन करने में। बाप कितना सर्वशक्तिवान है। सब वर्सा तुमको दे देते हैं। मनुष्यों ने लाखों वर्ष आयु कह दी है। तो कुछ भी समझते नहीं। बाप तुमको सारी विश्व के मालिक बनाते हैं। फिर भी बच्चे घड़ी2 भूल जाते हैं। तरकणी वस्तु है ना। कोई अच्छी रीत याद करते हैं तो पद भी ऐसा पाते हैं। तुम्हारी एमऑब्जेक्ट ही है नर से नारायण बनना। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए ;परंतु बंदरबुद्धि बदलते ही नहीं। कहते हैं शेर के दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। यहां तो हैं ठीकर के बर्तन। ठोकर लगे और टूटे। बैठे2 हार्टफेल हो जाते हैं। वहां ऐसे थोड़े ही होता है। वहां तो जब आयु पूरी होगी तब शरीर छोड़ेंगे खुशी से। यहां ठीकर कितना जल्दी टूट जाते हैं। ठीकर बुद्धि बन पड़े हैं। अब तुमको ठीकर से ठाकुर बनाते हैं बाप। तुम्हारे में भी कोई तो जैसे सेंसिबुल है, कोई तो जैसे ठीकर है। कुछ भी बुद्धि में धारण नहीं होती। कितनी बड़ी पढ़ाई है। सारे वर्ल्ड की यूनिवर्सिटी है। वह तो सिर्फ नाम लिख देते हैं विश्व विद्यालय ;परंतु है थोड़े ही। विश्व माना सारी दुनियां के लिए तो यह ही है। ठीकर से ठाकुर सिर्फ तुम ही बनते हो। अभी तुम समझते हो बरोबर हम ठीकर बुद्धि थे। बाप कितना उंच बनाने पुरुषार्थ कराते हैं। बाप कहते हैं हमारा तो काम ही पुरुषार्थ कराना। राजधानी में नम्बरवार तो होंगे ना। फिर भी तारना करते हैं। तरस तो पड़ता है ना। ज्ञान में आने बाद विकार में गिरते हैं तो फिर उंच पद पाना मुश्किल है। सदगुरू के निंदा कराने वाले ठौर न पाय सकें। सबसे कड़ा है काम शत्रु। बच्चे जन्मपत्री भी बताते हैं। बाबा कहते हैं नगन हुए हो तो बताओ। फिर हल्के हो जावेंगे। बाकी थोड़ा बहुत है वह योगबल से भी कट जावेगा। मुख्य है ही याद का बल, जिससे ही पाप कट जावेगा। इस शरीर को भी भूल जाना है। यह तो पुराना शरीर है इनको अब क्या करेंगे? सब तमोप्रधान हैं। झाड़ी की कब इतनी बड़ी आयु सुना? (लाखों वर्ष) कोई मान नहीं ;परंतु मनुष्यों की बुद्धि ऐसी हो गई है जो सब बातों में हां2 करते रहते हैं। वह शास्त्रों की अथॉर्टी बने हैं। कितना नशा रहता है। बाबा कहते हैं यह तो जो अपन को ईश्वर कहलाते हैं बड़ी हिरण्यकश्यप जैसे हैं। जो अपन को ईश्वर कहलाय अपनी पूजा बैठ कराते हैं। आगे ऐसे नहीं कहते थे। अगर युगे2 अवतार कहते हैं तो भी 4 युग हैं ना। फिर तो 4 अवतार कहें। पांचवां पुरुषोत्तम युग को

जानते नहीं। यह फिर कितने अवतार कह देत हैं। पूरा न बताय सकते तो कह देते (हैं) हम ही भगवान हैं। इसलिए दिखाते हैं थम्ब से नरसिंह निकला.....ऐसा चित्र दिखाते हैं। बाप समझाते हैं अभी तुम असुर से देवता बनते हो। अभी तो रावणराज्य है ना। रामराज्य तो होता ही है सतयुग में। सतयुग–त्रेता वायसलेस दुनियां थी। फिर विषस दुनियां कब शुरू हुई यह किसको भी पता नहीं है। बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं। अभी तुम नालेज पाकर आदि, मध्य,अंत को जान गए हो। बाप को नालेजफुल कहा जाता है। कहते हैं गॉड इज नालेजफुल ;परंतु क्या नालेज है यह नहीं जानते। तुमको अब नालेज मिल रही है। भाग्यशाली रथ तो जरूर चाहिए ना। बाप कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूं तब यह भाग्यशाली बनते हैं। नहीं तो दुर्भाग्यशाली था। तमोप्रधान दुनियां में सभी दुर्भाग्यशाली ही हैं। सतयुग में पदमभाग्यशाली होंगे। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है जिससे तुम ऐसा बनते हो। ज्ञान तो एक ही बार मिलता है। भक्ति में तुम धक्के खाते रहे। अंधियारा है ना। ज्ञान है दिन। तुम धक्का नहीं खा सकते हो। बाप कहते हैं भल घर में ही गीता पाठशाला खोल दो। बहुत ऐसे भी कहते हैं हम तो नहीं उठाते हैं। दूसरों के कल्याण लिए हम जगह देते हैं। यह भी अच्छा है। यहां तो बहुत ही सायलेंस रहना चाहिए। यह है होलियेस्ट ऑफ दी होली क्लास। जहां शांति में तुम बाप को याद करते हो। तुमको अपनी शांतिधाम जाना है। बाप को बहुत याद करना है। सतयुग में भी तुमको शांति थी। 21जन्म लिए तुम सुख–शांति का वर्सा पाते हो। बेहद का बाप है (बेहद) का वर्सा देने वाला। तो ऐसे बाप को पूरा फालो करना चाहिए। अहंकार न आना चाहिए। वह भी गिराय देती है। बहुत ही धैर्यवत अवस्था हो। हठ भी नहीं। देहाभिमान को हठ कहा जाता है। बहुत ही मीठा बनना है। देवताएं कितने मीठे हैं। कितनी कशिश होती है। बाप तुमको ऐसा बनाते हैं तो ऐसे बाप को कितना याद करना चाहिए। बाबा आपकी तो कमाल है। हमको क्या पता आत्मा क्या चीज़ परमात्मा क्या चीज़ है। नम्बरवन ही कहते हैं हम नहीं जानते (थे)। तो बाकी फिर क्या जानेंगे? बाप क्या से क्या बनाते हैं। तुम बच्चों को भी सुमिरण कर बहुत ही खुश होना चाहिए। इनको तो यह पक्का निश्चय है हम यह शरीर छोड़ जाय यह बनेंगे। एम ऑब्जेक्ट का चित्र तो पहले2 देखना चाहिए। वह ता पढ़ाने वाला देहधारी टीचर होते हैं। यहां पढ़ाने वाला है निराकार बाप। आत्माओं को ही पढ़ाते हैं। यह अंदर में चिंतन करने से ही बहुत खुशी होती है। इनको भी नशा रहता होगा ना बाबा का रथ है। इसलिए भाग्यशाली कहते हैं। तुम हो पोत्रे। यह भी वर्या लेंगे ना। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा कैसे होता है यह वंडरफुल बातें तुम ही सुनते हो जो फिर धारण कर और सुनाना है। बाप तो सबको विश्व का मालिक बनाते हैं। बाकी यह समझ सकते हैं राजाई करने लायक कौन बनेंगे? बाप का तो फर्ज है बच्चों को उंच बनाना। विश्व का मालिक बनाते हैं। चण्डाल बनने वाले भी विश्व के मालिक तो हैं ना। बाप कहते हैं मैं थोड़े ही विश्व का मालिक बनता हूं। इस मुख द्वारा बाप बैठ नालेज सुनाते हैं। आकाशवाणी कहते हैं ;परंतु अर्थ थोड़े ही जानते हैं। आकाशवाणी देहली से सुना। ऐसे क्यों नहीं कहते पंडितों में प्रोग्राम सुनो। आकाशवाणी तो यह है ना। बाप उपर से आते हैं। इस गउ मुख द्वारा सुनाते हैं। इस मुख द्वारा वाणी निकालते हैं। बच्चे, बहुत मीठे2 होते हैं। कहते हैं बाबा आज यह टोली तो खिलाओ। बाप कहेंगे झझी टोली (बहुत ही टोली) बच्चे अच्छे हैं कहेंगे बाबा हम बच्चे भी हैं, सर्वेंट भी हैं। बाबा को बड़ी खुशी होगी। बाकी उल्लू–पाजी कहेंगे तो.....एकदम उल्टे ऐसे लटके हैं जो सुल्टे होते ही नहीं। बंदर से मंदिर लायक बनते ही नहीं। माया ने उल्टा लटकाय दिया है। बाप फिर सुल्टा बनाते हैं। ओम।

अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप का नमस्ते।